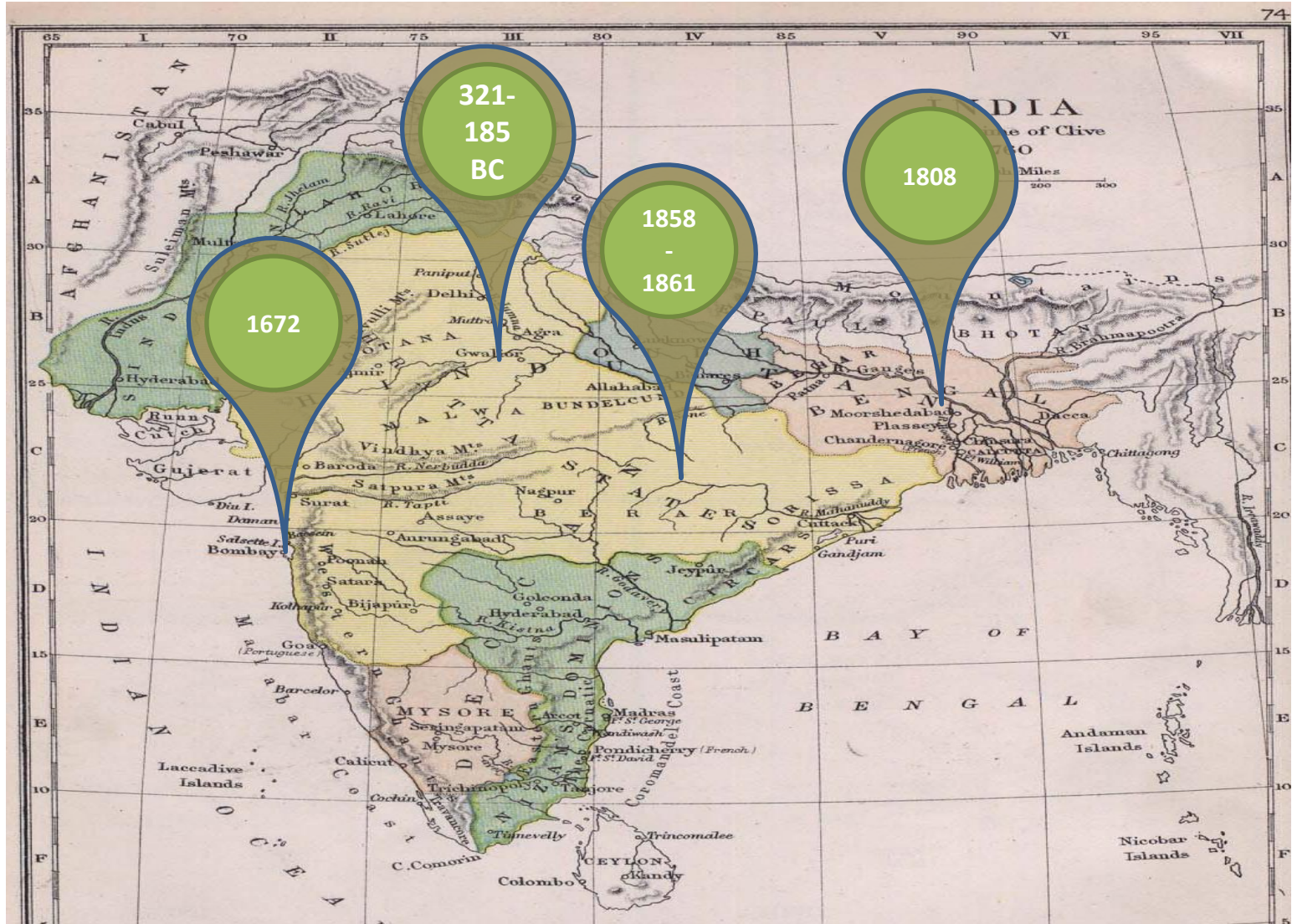


सामुदायिक पुलिसिंग एवं आपातकालीन स्थिति (कोविड १९)

--डॉ. मदित कुमार सिंह
विजिटिंग रिसर्च फेलो,
इयूक विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका
ग्यारह वर्षों से सामुदायिक भागीदारी प्रबंधन
पर अभ्यास एवं शोध कार्य

समुदाय एवं पुलिस: संक्षिप्त इतिहास



सामुदायिक पुलिसिंग: समुदाय, पुलिस आपातकालीन स्थिति

समुदाय (Community) =
'com'(together अर्थात
एक साथ)+
'Munis' (Serving अर्थात
सेवा करना)
(भाषा, क्षेत्र, धर्म, जाति
पेशे आदि के आधार पर)

- 'पुलिस' शब्द की
व्युत्पत्ति ग्रीक शब्द
'पोलिस' से हुई है
जिसका अर्थ है 'शहर'
- लैटिन शब्द
'पोलाइटिया' अर्थात
एक राज्य या सरकार
की परिस्थिति

आपातकालीन स्थिति

=
एक गंभीर, अप्रत्याशित
और अक्सर खतरनाक
स्थिति
(प्राकृतिक या मानवीय
आपदा: महामारी)

पुलिसिंग की असली कुंजी है- "पुलिस लोग हैं और लोग पुलिस हैं"



समुदाय एवं पुलिस: संक्षिप्त इतिहास

- औपनिवेशिक भारत में पुलिस- जनसंपर्क
 - पुलिस को "औपनिवेशिक शासन को बनाए रखने के लिए डिज़ाइन की गई संस्था" के रूप में उठाया गया था। पुलिस को उनके "बिना लाइसेंस के अत्याचार, उनके भ्रष्टाचार और क्रूरता" के लिए जाना जाने लगा।
-- Arnold, 1986.
 - पुलिस को उनके जनता के प्रति असभ्यता, कठोरता और हिंसा, विशेष रूप से समाज के हाशिए के वर्गों के लिए
- पुलिस के कामकाज को जनता के अविश्वास और उदासीनता का सामना करना पड़ा। १९८० के बाद "जाति," "सबाल्टर्न," "संपत्तिपूर्ण वर्ग," "शहरी गरीब," और "पड़ोस नेटवर्क" जैसी विभिन्न सामाजिक श्रेणियां का उपयोग । -- Singh, 2019.
- टार्चर को इन सभी सामाजिक श्रेणियों से जोड़ कर देखा जाने लगा। जिसने विभिन्न समुदायों और पुलिस के सम्बन्धों की एक ऐतिहासिक रूप रेखा बनाई।

समुदाय एवं पुलिसिंग: संक्षिप्त इतिहास

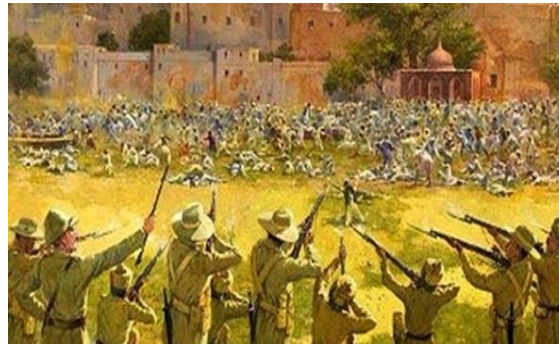
चौरी चौरा, गोरखपुर,
उत्तर प्रदेश १९२२



विदुरश्वाथा
चिककबाल्लापुर, कर्नाटक -
आंध्र प्रदेश सीमा १९३८



जलियावाला बाग, अमृतसर,
पंजाब १९१९



सामुदायिक पुलिसिंग : संक्षिप्त इतिहास



“मेरे विचारों की पुलिस अहिंसा में विश्वास रखने वालों से बनेगी। वे सेवक होंगे, प्रजा के स्वामी नहीं। प्रजा सहज ही उन्हें कोई सहायता प्रदान कर देगी और परस्पर सहयोग से वे लगातार घटते विक्षोभों से आसानी से निपट लेंगे।”

पुलिस और मजिस्ट्रेट स्वाभाविक रूप से अपने वर्ग को अपने कर्तव्य से अधिक प्यार करते हैं।

अल्पसंख्यकों द्वारा सत्ता के बंटवारे के दावे को साम्प्रदायिकता कहा जाता है जबकि पूरी शक्ति पर बहुमत द्वारा एकाधिकार करना राष्ट्रवाद कहलाता है।



पुलिस स्वाभाविक रूप से उनके दैनिक कार्य में लोगों के साथ बहुत अंतरंग हो जाती है; इसलिए, पुलिस और जनता के बीच संबंधों का सवाल बहुत महत्वपूर्ण है।

सामुदायिक पुलिसिंग: वैश्विक परिदृश्य

- पुलिस के साथ एक स्थान पर व्यवस्था रखने की गतिविधि

-- ऑक्सफोर्ड शब्दकोश

- “अपराध को रोकने और प्रबंधित करने के साथ-साथ समुदाय की जरूरतों के आधार पर सुरक्षा और व्यवस्था के अन्य पहलुओं में पुलिस के साथ भागीदार के रूप में कार्य करने के लिए जनता को प्रोत्साहित करने की रणनीति”

-- संयुक्त राष्ट्र पुलिस

- जॉर्ज फ्लॉयड, २५ मई, २०२० मामला: पुलिस सुधार के मूल में नस्लीय पूर्वाग्रह और पुलिस की बर्बरता है . सामुदायिक पुलिसिंग के तीन मुख्य घटक बताये गए

- सामुदायिक भागीदारी
- संगठनात्मक परिवर्तन
- समस्या को सुलझाना

--Sage प्रकाशन, 2021

सामुदायिक पुलिसिंग : भारतीय परिपेक्ष्य

- १९५० स्वतंत्र भारत में गुजरात और महाराष्ट्र ग्राम रक्षक दल (Village Defense Party)
- १९६३ में उड़ीसा ने चौकीदार पद को समाप्त कर के ग्राम राखी किया जिसके अंतर्गत १५०० सिपाहियों को ५०००० गांव का जिम्मा दिया गया, १९६४ में कर्नाटक ने दलपति (ग्राम प्रमुख) एवं ग्राम रक्षक दल (Village Defense Party) बनाने की जिम्मेदारी लोकल पुलिस अधीक्षक को दी
- मध्य प्रदेश में १९९५ पारदर्शिता, जवाब देही तथा खुलेपन की नीति
 - परिवार परामर्श केंद्र, नगर एवं ग्राम रक्षा समिति, बल मित्र समिति
- 2002-03, पुलिस अनुसंधान और विकास ब्यूरो, भारत सरकारने अंतराष्ट्रीय मानकों और उपलब्ध संसाधनों के आधार पर सामुदायिक पुलिसिंग की प्राथमिकताएं सुनिश्चित कीं
 - बीट सिस्टम को मजबूत बनाना, समुदाय के साथ औपचारिक परामर्श की संरचना बनाना सामुदायिक पुलिस संसाधन केंद्र बनाना, पुलिस संरचना के साथ उपरोक्त का एकीकरण, साझेदारी और समस्या समाधान

सामुदायिक पुलिसिंग: वाह्य चुनौतियां

- ढांचागत चुनौतियाँ
 - पर्याप्त पुलिस बल का अभाव (संयुक्त राष्ट्र : 222 की प्रति लाख जनसंख्या)
 - लम्बे समय तक कार्य करना
 - प्रशिक्षण एवं संसाधन का अभाव
- राजनैतिक चुनौतियाँ
 - अनुचित राजनीतिक हस्तक्षेप
 - स्थानीय राजनीती
- कार्यस्थल पर आंतरिक वातावरण
 - साथियों द्वारा भेदभाव
 - उत्पीड़न
- सामाजिक चुनौतियाँ
 - हिंसक चरमपंथ
(नक्सलवाद, धर्म, जातिवाद)



पुलिस के लिए? या समुदाय के लिए?

व्यक्तिगत स्तर की चुनौतियां

- मानसिक तनाव
 - क्रोध
 - लोभ
- समायोजन
 - जल्द तबादले
 - आकस्मिक परिस्थितियां
- यौन तनाव
 - सहकर्मी के प्रति आकर्षण (यौन उत्पीड़न)
 - समुदाय में व्यक्ति विशेष के प्रति आकर्षण (यौन उत्पीड़न)

दुष्परिणाम

- दिल्ली पुलिस के बीते साढ़े तीन साल में औसतन हर 35 दिन में एक कर्मी ने आत्महत्या की।

--नवभारतटाइम्स 18 Oct 2020

- छत्तीसगढ़
 - 08 जून 2020: एसएचओ ने एक स्थानीय को पीटा
 - मई 2021: डीएम ने एक लड़के को थप्पड़ मारा
- उत्तर प्रदेश
 - 21 मई 2021: तीन पुलिसकर्मियों पर एक किशोर मुस्लिम लड़के की हत्या का आरोप



तनाव दूर करने के उपाय

टैग्मान (2020). कैंपस सिक्योरिटी रिपोर्ट

- सोशल मीडिया से दूरी
- तनाव के कारण को बदलने का प्रयास मत कीजिये
- दिमागी परिदृश्य को बदलिए
 - दिमागी पूर्वाभ्यास, अपनी वास्तविक एहसास को समझने का प्रयास करें
 - ब्रेक लें (पानी से मुँह धोएं, थोड़ा पानी पियें)
 - चिंताओं को समयबद्ध करें
 - प्रकृति के बीच समय बिताएं , क्या मैं तनाव को बदल सकता हूं ? क्या मैं इसे बदलूंगा ?

अन्य उपाय

- योग
- व्यायाम
- उचित खान पान
 - किस मौसम में क्या खाएं
 - कौन से पहर में क्या खाएं
- प्रोफेशनल की मदद लें

सामुदायिक पुलिसिंग प्रैक्टिसेस

- केंद्रीय स्तर पर रूपरेखा
- छत्तीसगढ़
 - बैंकिंग फ्रॉड सम्बन्धी जागरूकता
 - ट्रैफिक रूल्स और अवेयरनेस प्रोग्राम्स
- हिमाचल प्रदेश
 - लड़कियों के लिए आत्मरक्षा प्रशिक्षण
 - शक्ति ऐप / गडिया हेल्प लाइन
 - ट्रैफिक रूल्स और अवेयरनेस प्रोग्राम्स
- पश्चिमी बंगाल
 - मानव व्यापार पर रोक
- पुणे, महाराष्ट्र
 - पुलिस और ग्राम पंचायतें मजदूरों की आवाजाही पर नज़र रखती हैं

